(हिन्दी साहित्य का इतिहास)

शास्त्री प्रथम वर्ष

छायावादी कवि - सुमित्रानन्दन पन्त

→ सुमित्रानन्दन पन्त को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है।

→ सुमित्रानन्दन पन्त जी का जन्म सन् 1900 ई० में कौशानी (अल्मोड़ा) में हुआ था।

→ पन्त जी के बचपन का नाम गुसाईं दत्त था।

→ पन्त जी की मृत्यु सन् 1977 ई० में इलाहाबाद में हुआ था।

→ पन्त जी की प्रथम कविता 'गिरजे का घण्टा' सन् 1916 ई० में प्रकाशित हुआ था।

→ सुमित्रानन्दन पन्त जी के काव्य को विद्वानों ने चार चरणों में बाँटा है -

1. छायावादी — (i) उच्छ्वास (ii) ग्रन्थि
(iii) वीणा (iv) पल्लव
(v) गुंजन

2- प्रगतिवादी -
(i) युगान्त (ii) युगवाणी
(iii) ग्राम्या

3- अन्तश्चेतनावादी - (i) स्वर्ण किरण

Scanned with CamScanner

(ii) स्वर्ण धूलि (iii) युग पथ

4- नवमानवतावादी-

(i) उत्तरा (ii) कला और बूढ़ा चाँद (iii) अतिमा (iv) लोकायतन (v) चिदम्बरा।

→ पन्त जी की प्रथम छायावादी रचना उच्छ्वास है और अन्तिम छायावादी रचना गुंजन है।

→ सुमित्रानन्दन पन्त ने 'लोकायतन' नामक महाकाव्य महात्मा गाँधी के जीवन पर लिखा गया है।

→ सुमित्रानन्दन पन्त की महत्त्वपूर्ण कविताओं का संकलन 'चिदम्बरा' शीर्षक से प्रकाशित है। इस पर इन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

→ पंत जी को 'संवेदनशील इन्द्रिय बोध का कवि' कहा जाता है।

→ सुमित्रानन्दन कृत 'पल्लव' की भूमिका को छायावाद का घोषणा पत्र (मैनीफेस्टो) कहा जाता है।

भूपेन्द्र सिंह
सहायक प्राचार्य, हिन्दी
अवध बिहारी संस्कृत महाविद्यालय,
रघौमपुर, खगड़िया

Scanned with CamScanner